INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 4 | MAY – 2024

पं. माधवराव सप्रे की पत्रकारिता में राष्ट्रीय चेतना

डॉ. आशीष रामबचन दुबे
सहायक प्रोफेसर, भारतीय जन संचार संस्थान पश्चिम क्षेत्रीय परिसर अमरावती, महाराष्ट्र.

सारांश

पं. माधवराव सप्रे का हिंदी पत्रकारिता में बेहद सम्मान के साथ नाम लिया जाता है. उन्हें भारतीय नवजागरण का अग्रदूत और राष्ट्रीयता का अग्रदूत भी संबोधित किया जाता है. केवल पत्रकारिता जगत ही नहीं बल्कि साहित्य और सामाजिक क्षेत्रों में उनका नाम बड़े आदर से लिया जाता है. इसके पीछे मुख्य कारण पं. माधवराव सप्रे का संघर्ष और कठिनाइयों से भरा जीवन होने के बावजूद भी उन्होंने कभी अपने आत्मविश्वास को कम नहीं होने दिया. तमाम विपत्तियों और संकटों से जुझते हुए उन्होंने कभी भी अपने लेखन की धार को कम नहीं होने दिया. युवाओं में राष्ट्रीय चेतना को जगाने में खुद को झोंक दिया. ब्रिटिश हुकुमत के आगे घुटने टेके बिना निरंतर राष्ट्र की सेवा करते रहे . यातनाओं को सहते हुए देश को स्वतंत्रता प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर करने का प्रयास करते रहे हैं. किंतु समय के साथ उनके योगदान को वह स्थान नहीं मिल पाया जिसके वे हकदार थे और हैं. प्रस्तुत विषय 'पं. माधवराव सप्रे की पत्रकारिता में राष्ट्रीय चेतना' शोध पत्र के माध्यम से पत्रकारिता के माध्यम से पंडित माधवराव सप्रे के कार्यों का अध्ययन किया गया. उनकी पत्रकारिता में राष्ट्रीय चेतना के मुख्य बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया है. इस शोध पत्र के माध्यम से पं. माधवराव सप्रे ने पत्रकारिता और राष्ट्र की सेवा के लिए किस तरह से अपने संपूर्ण जीवन को खपाया, इसे भी तथ्यों के साथ उद्घाटित किया गया है.

बीज शब्द : पं. माधवराव सप्रे, पत्रकारिता, राष्ट्रीय चेतना, स्वतंत्रता, हिंदी.

प्रस्तावना

भारत में ब्रिटिश हुकुमत के काल में पत्रकारिता का उदय हुआ. पत्रकारिता का प्रारंभ 1780 में असंतुष्ट अंग्रेज अधिकारी ने किया. हालांकि इसकी कमान भारतीयों ने संभालते ही पत्रकारिता को पहले सामाजिक जनजागृति और चेतना जगाने का माध्यम बनाया. पत्रकारिता को शिक्षा का प्रचार प्रसार करने और भारतीय समाज में फैली कुरीतियों पर कुठाराघात करने, महिलाओं के उत्थान के लिए किया गया. इसका प्रारंभ बंगाल से हुआ. इसके बाद पत्रकारिता को माध्यम बनाकर देश में अंग्रेजी हुकुमत के खिलाफ जारी आंदोलनों को जन-जन तक पहुंचाने का माध्यम बनाया गया. प्रारंभ में भारत में अंग्रेजी समाचार पत्रों का प्रकाशन हुआ. 1818 में बंगाल गजट के साथ भारत में भारतीय भाषाओं में समाचार पत्रों के प्रकाशन की शुरुआत हुई. हिंदी का पहला अखबार 'उदंत मार्तण्ड' सन् 1826 में कलकता से प्रकाशित हुआ. 19वीं शताब्दी में भारत में समाचार पत्रों के बढ़ते प्रभावों को देखते हुए अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों का प्रारंभ हुआ. बावजूद इसके भारत के साहित्यकार और पत्रकारों ने स्वतंत्रता प्राप्ति के ध्येय आगे बढ़ते रहे. इसकी ज्योति को आगे बढ़ाते रहे.

हालांकि जब भारतीय पत्रकारिता में पत्रकारों और साहित्यकारों के योगदान की चर्चा की जाती है उस समय पं. माधवराव सप्रे को वह स्थान नहीं मिल पाता जिसके वे हकदार हैं. पं. माधवराव सप्रे को भारतीय नवजागरण का अग्रदूत माना जाता है. वे पत्रकार और साहित्यकार तो थे ही साथ ही एक सजग राष्ट्र प्रहरी भी थे. साहित्य और पत्रकारिता से जुड़े अध्ययनकर्ताओं के मुताबिक पं. माधवराव सप्रे

एक ऐसे स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने राष्ट्रीय जागृति के लिए अपने जीवन का सर्वस्व समर्पित कर दिया. ' सप्रे जी भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के अग्रनायक थे. भारत की राष्ट्रीयता के निर्देशक थे. नवजागरण के पुरोधा थे. उन्होंने लोकमान्य तिलक के साथ भारत को जागृत करने का महत् कार्य किया. ' (पाण्डेय, 2022). ऐसे में 'पंडित माधवराव सप्रेकी पत्रकारिता में राष्ट्रीय चेतना ' विषय पर शोध करना आवश्यक प्रतित होता है.

शोध उद्देश्य

1. पं. माधवराव सप्रे की पत्रकारिता का अध्ययन करना.
2. पं. माधवराव सप्रे की पत्रकारिता के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना का अध्ययन करना.
3. पं. माधवराव सप्रे के प्रयासों के प्रभाव का अध्ययन करना.

शोध प्रविधि

शोध कार्य को पूरा करने के लिए वर्णनात्मक शोध प्रविधि का अनुसरण किया गया है. शोध कार्य के दौरान संकलित तथ्यों का अध्ययन किया गया. शोध कार्य के लिए द्वितीयक सामग्री का उपयोग किया गया है.

पं. माधवराव सप्रे की जीवन यात्रा

मूलत: महाराष्ट्र के निवासी माधवराव सप्रे का जन्म दमोह जिले के पथरिया ग्राम में 19 जून 1871 को हुआ. वे अपने परिवार में सबसे छोटे थे. उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा वर्तमान में छत्तीसगढ़ तत्कालीन मध्यप्रदेश राज्य के बिलासपुर में में हुई. उन्होंने एक अंग्रेजी स्कूल में दाखिला लिया था. सन् 1887 में उन्होंने मिडिल स्कूल की परीक्षा में श्रेष्ठ प्रदर्शन किया. इसके आधार पर उन्हें सात रुपये मासिक छात्रवृत्ति मिली. उन्होंने हाईस्कूल की पढ़ाई रायपुर से की. कॉलेजी शिक्षा के लिए उनेंने जबलपुर के सरकारी कॉलेज में दाखिला लिया. किंतु उनका स्वास्थ खराब हो गया. वर्ष 1894 में सप्रे ने विक्टोरिया कॉलेज में एफ.ए की पढ़ाई करने लगे. उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एफ.ए की परीक्षा उत्तीर्ण की. इसके बाद वे नागपुर के हिस्लाप कॉलेज में बी.ए में प्रवेश लिया. किंतु पारिवारिक कारणों से वे परीक्षा में शामिल नहीं हो पाए. लिहाजा उन्होंने 1898 में कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी.ए की परीक्षा उत्तीर्ण की. उनका विवाह रायपुर के उपजिलाधिकारी की बेटी से हुआ था. किंतु उनकी असामयिक मृत्यु हो गई थी. उन्होंने दूसरा विवाह भंडारा के पं. गोविंदराव भाट बडेकर की बेटी पार्वती से किया. ' सप्रेजी एक कुशल संपादक, प्रकाशक , शिक्षक, कोशकार, क्रांतिकारी कथाकार, निबंधकार, अनुवादक, अध्यात्मिक साधक सबकुछ थे. उनकी बहुमुखी प्रतिभा के बहुत सारे आयाम और भूमिकाएं थीं. वे हर भूमिका में पूर्ण थे. कहीं कोई अधूरापन नहीं, कच्चापन नहीं. वे सिर्फ 54 साल जिए, किंतु जिस तरह उन्होंने अनेक सामाजिक संस्थाओं की स्थापना की, पत्र-पत्रिकाएं संपादित कीं, अनुवाद किया, अनेक नवयुवकों को प्रेरित कर देश के विविध क्षेत्रों में सक्रिय किया वह विलक्षण है.' (द्विवेदी, 2022). ' पं. माधवराव सप्रे लोकमान्य तिलक की विचारधारा से अभिप्रेरित थे. और उनका राष्ट्रवाद सिद्धांत तिलक के विचारों से उद्भूत था. वे तिलकजी के कट्टर अनुयायी और प्रबल समर्थक तथा राष्ट्रवाद के उनके विचारों को व्यापकता देने की दिशा में कार्य करते थे.' (जोशी, 2022). ' पं. माधवराव सप्रे को हिंदी से खास लगाव था. वे कहते थे - मैं मूलत: महाराष्ट्री हूं, लेकिन मुझे मौसी (हिंदी) ने पालकर बड़ा किया है.' (टेंभरे, 2022) .

पं. माधवराव सप्रे की पत्रकारिता का प्रारंभ

पत्रकारिता के क्षेत्र में पं.माधवराव सप्रे का आगमन तब हुआ जब भारत स्वतंत्रता प्राप्ती के लिए संघर्ष कर रहा था. पत्रकारिता की ओर उनका झुकाव काफी था. कॉलेज के दिनों से ही वे 'केसरी' के संपादक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक को पढ़ते थे. वर्ष 1899 में उन्होंने पेंड्रा के राजकुमार का ट्यूटर बनना स्वीकार किया. उनके मन में एक अखबार का प्रकाशन करने की ललक थी. वे राजकुमार को पढ़ाना छोड़कर पेंड्रा के बाहर नहीं जा सकते थे. लिहाजा उन्होंने रायपुर में वकालत कर रहे अपने मित्र पं.वामनराव लाखे और बिलासपुर में वकालत कर रहे रामराव चिंचोलकर से संपर्क कर मासिक पत्रिका के प्रकाशन की योजना में सहयोग मांगा. उनके मित्र तैयार हो गए. ' सप्रेजी ने पचास रुपए अल्पवेतन में भी बचत करते हुए जनवरी, **1900** में मासिक पत्र 'छत्तीसगढ़ मित्र' का प्रकाशन आरंभ किया' **(श्रीधर, 2022).** पं. सप्रे 'छत्तीसगढ़ मित्र' के माध्यम से छत्तीसगढ़ में रहने वाले लोगों और उस क्षेत्र को समृद्ध बनाना चाहते थे. छत्तीसगढ़ मित्र के संपादक

चिंचोलकर जी ने 'छत्तीसगढ़ मित्र' के नाम की सार्थकता को स्पष्ट करते हुए लिखा – सप्रेजी कलकत्ता से प्रकाशित भारत मित्र से काफी प्रभावित थे. वर्ष 1978 से प्रकाशित भारत मित्र एक सुसंपादित पत्र था. इसकी प्रसार संख्या कम होते हुए भी उसका कलेवर देशवासियों की सच्ची भावनाओं को प्रतिबिंबित करता था. उस समय छत्तीसगढ़ क्षेत्र काफी पिछड़ा हुआ था. शिक्षा का प्रसार कुछ नगरों तक ही सीमित था. गांव में स्कूल तक नहीं थे. कृषि एंव उद्योग धंधों की उन्नति शून्य थी. अत: सप्रेजी के मन में इस पिछड़े क्षेत्र को जागृत करने की भावना स्वाभाविक थी. इसी से वहां की जनता के सच्चे मित्र की भूमिका अदा करने के उद्देश्यसे अपने पत्र का नाम 'छत्तीसगढ़ मित्र' रखा.' **(राजपूत, 2000)** कुछ वर्षों बाद आर्थिक समस्याओं के कारण 'छत्तीसगढ़ मित्र' का प्रकाशन बंद हो गया.

'हिन्दी केसरी' और पं. माधवराव सप्रे

हिस्लॉप कॉलेज नागपुर में अध्ययनरत रहते हुए पं. माधवराव सप्रेजी पर लोकमान्य तिलक के विचारों और उनके व्यक्तित्व का काफी प्रभाव पड़ा था. वर्ष 1897 में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक पर राजद्रोह का केस चला. इस दौरान एक पुस्तक तिलक ट्रायल पर आधारित एक नाटक का मंचन कॉलेज में किया गया. इस नाटक का उन पर काफी प्रभाव पड़ा. छत्तीसगढ़ मित्र बंद होने के बाद सप्रे नागपुर लौट आए. लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने अपने राष्ट्रवादी विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए मराठी भाषा में 'केसरी' का प्रकाशन शुरू किया था. अत्यंत सीमित संसाधनों और ब्रिटिश साम्राज्य के निरंतर बढ़ते दबाव के बीच केसरी एक सशक्त और प्रभावी जनमाध्यम के रूप में सामने आया. लेकिन, मराठी नहीं जानने वाले बहुसंख्य लोग तिलक के विचारों का लाभ लेने से वंचित थे. तिलकजी ने महसूस किया कि यदि पूरे देश में राष्ट्रवादी विचारों की अलख जगानी है तो ऐसी भाषा में संवाद जरूरी है, जिसे बहुसंख्य भारतीय समझते हों.

इस दिशा में सार्थक प्रयास करते हुए पं. माधवराव सप्रे ने सन् 1906 में नागपुर में 'हिन्दी ग्रंथमाला' का प्रकाशन शुरू किया. यह एक मासिक पत्रिका थी. इसमें सप्रेजी विविध विषयों पर निबंध लिखते थे. इन निबंधों के जरिए वे देश के स्वाभिमान की बात करते थे. स्वदेशी आंदोलन और बॉयकॉट सप्रे जी का निबंध था. वर्ष 1909 में यह पुस्तक जब्त कर ली गई. एक निबंध में सप्रे ने लिखा था कि 'नाक दबाने से मुंह खुलता है. जब तक हमारे आंदोलन में सरकार को मजबूर करने की शक्ति न होगी तब तक सरकार पर उसका कुछ असर न होगा.' (जोशी, 2022). सप्रे लगातार अपनी लेखनी से राष्ट्रवादी विचारों का संप्रेषण कर रहे थे. उन्हें राष्ट्रवादी चेतना के संवाहक के रूप में पहचान मिली थी.

13 अप्रैल 1907 में नागपुर से 'हिन्दी केसरी' का प्रकाशन शुरू हुआ. यह एक मासिक पत्रिका थी. 13 अप्रैल 1907 में यानी मराठी 'केसरी' के प्रकाशन के 26 वर्ष बाद नागपुर से 'हिन्दी केसरी' का प्रकाशन शुरू हुआ. इसे प्रकाशित करने वाली समिति के मुखिया भी सप्रे ही थे. उन्होंने ही 'हिन्दी केसरी' का संपादन संभाला, जबकि पं. लक्ष्मीधर वाजपेयी, पं. जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, पं. लक्ष्मीधर पांडे, पं. सिद्धनाथ दीक्षित जैसे लोग भी इसमें सहयोग देने में जुट गए. दीक्षितजी के हाथों में प्रबंधन की जिम्मेदारी दी गई. शुक्लजी हिन्दी केसरी के दूसरे संपादक बने, जिन्होंने प्रकाशन के चार माह बाद ही यह दायित्व संभाल लिया. सप्रे व्यवस्था का कार्य देखते रहे.

पत्र में आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी, कामता प्रसाद गुरु, गंगाप्रसाद अग्निहोत्री, माखनलाल चतुर्वेदी और लोचन प्रसाद पांडे जैसे प्रतिभाशाली लेखकों के ओजस्वी लेख प्रकाशित हुआ करते थे. हिंदी केसरी के प्रथम अंक में उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए सप्रेजी ने लिखा था कि ' हमने वर्तमान समय के एक राजनीतिक वीर और तत्ववेत्ता के सार्वजनिक विचार जो अब तक केवल मराठी भाषा में प्रकट होते थे, हिंदी में प्रकाशित करने का निश्चय किया है. अब केवल इन्हीं बातों का विचार किया जावे कि किन उपायों से सरकार की वर्तमान राजनीति और शासन पद्धति में हम लोग सुखकारक परिवर्तन करा सकेंगे. किन उपायों से प्रजा अपने राज्योचित हक सरकार से पा सकेगी. किन उपायो से आर्य माता राजनीतिक दबावों से मुक्त होकर 'स्वराज्य' का सुखकारी मुकुट अपने मस्तक पर धारण करेगी.' (जोशी, 2022). हिन्दी केसरी जल्द ही हिन्दी भाषियों के बीच बेहद लोकप्रिय हो गया. अंग्रेजी शासन के दमन के चलते अपने अस्तित्व पर अनेक विपदाओं को झेलते हुए भी हिन्दी केसरी स्वाधीनता की लड़ाई लड़ने के अपने उद्देश्य से डिगा नहीं. ब्रिटिश सरकार को पत्र में प्रकाशित लेख खटक रहे थे, लिहाजा 22 अगस्त 1908 को सप्रेजी गिरफ्तार कर लिये गए. उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया. ' हिंद केसरी' में प्रदर्शित अपनी गहरी राष्ट्रवादी निष्ठा और समर्पण के कारण ही सप्रेजी को जेल जाना पड़ा था. 22 अगस्त, 1908 को इंडियन पैनल कोड की धारा 124(अ) के तहत सप्रेजी को गिरफ्तार किया गया. यह एक ऐसा कदम था जिससे सारा देश हिल गया था. यह सप्रेजी के राजनीतिक जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण तथा अविस्मरणीय पड़ाव था.' (जोशी, 2022) इसी दौरान पारिवारिक दबावों के चलते सप्रेजी को माफीनामा लिखकर देना पड़ा. उनके इस कदम की आलोचना देशभर के साहित्यकारों और बुद्धिजीवियों ने की. यहाँ तक कि हिन्दी केसरी में भी सप्रे की निंदा की

गई. निष्पक्ष और तटस्थ पत्रकारिता का इससे बेहतर उदाहरण भला और क्या हो सकता है. 'हिन्दी केसरी' के प्रकाशन का रिकार्ड मार्च 1909 तक ही उपलब्ध है. इस तरह देखा जाए तो यह पत्र सिर्फ दो वर्ष तक ही प्रकाशित हुआ. लेकिन, इस अल्पावधि में ही राष्ट्रीय चेतना और स्वाधीनता की अलख जगाने का जो कार्य 'हिन्दी केसरी' ने किया उसे पत्रकारिता जगत में एक गौरवशाली अध्याय के रूप में याद किया जाएगा. हिंदी केसरी के माध्यम से जहां पं. माधवराव सप्रे ने विदर्भ में हिंदी की लोकप्रियता बढ़ाई.

निष्कर्ष

पं. माधवराव सप्रे जी का जीवन संघर्षों से भरा रहा. बावजूद इसके परिस्थिति के आगे हार नहीं मानी. उनके परिवारिक जीवन में भी दुखों की भरमार रही. फिर भी उन्होंने अपने निजी हितों और सुख से अधिक उन्होंने देशहित को महत्व प्रदान किया. देश सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया. छात्र जीवन से ही उनके मन में देश को स्वतंत्र करने का ध्येय रहा. इसके लिए उन्होंने अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया. उन्होंने तमाम आर्थिक तंगी के बावजूद भी 'छत्तीसगढ़ मित्र' का प्रकाशन किया. ' हिन्दी केसरी' और हिंदी ग्रंथमाला के माध्यम से उन्होंने युवाओं में राष्ट्रीय चेतना को जगाने का प्रयास किया. प. माधवराव सप्रे जी का राष्ट्र के प्रति समर्पित भाव व चिंतन हम सबके लिए प्रेरणादायी तथा अनुकरणीय है. राष्ट्रनिष्ठा को सर्वोच्च मानकर कैसे नेतृत्व प्रदान कर सकते है इसका एक सटीक उदाहरण सप्रेजी ने प्रस्तुत किया. उन्होंने अपने लेख और निबंध के माध्यम से अंग्रेजों की गुलामी से देश को आजाद कराने के स्वप्न को साकार करने की दिशा में आगे बढ़ाया. उन्होंने 'हिन्दी केसरी' में तिलक के विचारों को जस का तस प्रस्तुत कर सरकार की अमानवीय दमनकारी नीतियों का खुलकर विरोध किया. इसी से उनकी पत्रकारिता में राष्ट्रीय चेतना की झलक दिखती है.

संदर्भ सूची

1. शर्मा, एस. 1978, हिंदी पत्रकारिता: राष्ट्रीय नव उद्बोधन, राज पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली.
2. जोशी. एस., 1991, हिंदी पत्रकारिता विकास और विविध आयाम, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर.
3. पाण्डेय, एम., 2022, पं. माधवराव सप्रे व्यक्ति और दर्शन, ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी, दिल्ली.
4. श्रीधर, वी. , 2022, पं. माधवराव सप्रे व्यक्ति और दर्शन, ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी, दिल्ली.
5. जोशी, एस., 2022, पं. माधवराव सप्रे व्यक्ति और दर्शन, ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी, दिल्ली.
6. द्विवेदी, एस., 2022, पं. माधवराव सप्रे व्यक्ति और दर्शन, ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी, दिल्ली.
7. सप्रे, ए., 2022, पं. माधवराव सप्रे व्यक्ति और दर्शन, ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी, दिल्ली.
8. चौबे. के., 2022, पं. माधवराव सप्रे व्यक्ति और दर्शन, ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी, दिल्ली.
9. टेंभरे, एच., 2022, पं. माधवराव सप्रे व्यक्ति और दर्शन, ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी, दिल्ली.
10. राजपूत, ए. 2000, माधवराव सप्रे की पत्रकारिता साहित्य का अनुशीलन, शासकीय ज्ञानचंद्र श्रीवास्तव स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दामोह मध्यप्रदेश.